श्री शांतिनाथ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री शांतिनाथ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.- 9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 ३. अरिहंत जैन सागर, 8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री शांतिनाथ विधान

जय बोलिये

शांति के दाता,
शांति के प्रदाता,
शांति के विधाता,
शांति के विख्याता,
शांति के जिनालय,
शांति के समुन्दर,
शांति के सिद्धालय,
शांति के परमहंस,
शांति के सुखालय,
परमपूज्य
श्री शांतिनाथ भगवान् की जय॥

भजन

शांतिप्रभु मेरे जीवन की नाँव।
हे प्रभु! नैया पार लगा दो[2], दो चरणों की छाँव।

टूटी फूटी मेरी नैया, तुम बिन कौन खिवैया।
भोग व्यसन के तूफानों में, कोई नहीं बचैया॥
अब तो मुझको दे दो सहारा[2] दुखने लागे पाँव।
शांतिप्रभु मेरे जीवन...॥ 1॥

मिथ्या की आँधी से यह नैया, उल्टी दिशा में जाए।
विषय-कषायों की भँवरों में, डोले व टकराए॥
प्रभु! नाजुक पतवार सँभालो[2], दे दो किनारा गाँव।
शांतिप्रभु मेरे जीवन...॥ 2॥

बुरे-विचारों की लहरों ने, नैया की कमजोर।
राग-द्वेष वाले ज्वार-भाटों का, चंदा करता शोर॥
आसक्ति के खारे जल में[2], मेरा बचा लो बहाव।
शांतिप्रभु मेरे जीवन...॥ 3॥

भूत पिशाचों के मच्छों ने, नैया की बेहाल।
लेकिन नाम तुम्हारा जप के, होती मालामाल॥
अन्तर बाहर भर दो शांति[2], दो निज रूप स्वभाव।
शांतिप्रभु मेरे जीवन...॥ 4॥

सारी दुनियाँ शांति खोजे, राजा रंक फकीर।
जिसको भी तुम मिलते उसकी, सजती है तकदीर॥
'सुव्रत' के मन मन्दिर में आओ[2], ढलने लगी अब साँझ।

श्री शांतिनाथ विधान

स्थापना (दोहा)

शान्तिप्रभु के पद-कमल, भक्त हृदय के प्राण।
द्रव्य भाव से भक्ति कर, हम तो करें प्रणाम॥

(मालती या लोलतरंग जैसा)

जब-जब याद तुम्हारी आई, तब-तब मन्दिर को हम दौड़े।
जब-जब मन्दिर को हम दौड़े, तब-तब दर्शन कर, कर जोड़े॥
जब-जब दर्शन कर, कर जोड़े, तब-तब पूजन पाठ रचाई।
जब-जब पूजन-पाठ रचाई, तब-तब याद विधान की आई॥
जब-जब याद विधान की आई, तब-तब शान्ति विधान रचाए।
जब-जब शान्ति विधान रचाए, तब-तब संकट दुख घबराए॥
जब-जब संकट दुख घबराए, तब-तब निज की शान्ति पाई।
जब-जब निज की शान्ति पाई, तब-तब याद तुम्हारी आई॥
शान्ति-प्रभु हमको मिले, जिनकी हमें तलाश।
आओ! आओ! मन वसो, करिये नहीं उदास॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जब-जब शान्ति प्रभु को भूले, तब-तब मिथ्या फलते फूले।
जब-जब मिथ्या फलते फूले, तब-तब जन्म मरण हम झेले॥
जैसे ही शान्ति को याद किया तो, निर्मल आतम सी झलकी है।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में धारा दी जल की है॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

जब-जब शान्ति का नाम लिया ना, तब-तब खूब उपद्रव होते।
जब-जब खूब उपद्रव होते, तब-तब चेतन के दिल रोते॥
जैसे ही शान्ति का नाम पुकारा, ज्वाला शीतल हुई चेतन की।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में धारा दी चंदन की॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

जब-जब शान्ति की माला न फेरी, तब-तब मन बंदर सा फिरता।
जब-जब मन बन्दर सा फिरता, तब-तब रूप दिगम्बर न रुचता॥
जैसे ही शान्ति की माला फेरी, मोक्ष महल सा निज में पाए।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अक्षत पुञ्ज चढ़ाए॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

जब-जब शान्ति का दर्शन न पाया, तब-तब निज की कली मुरझाई।
जब-जब निज की कली मुरझाई, तब-तब आतम खिलने न पाई॥
जैसे ही शान्ति का दर्शन पाया, दोष नशे हुई ब्रह्म गुलाला।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अर्पित पुष्पों की माला॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जब-जब ध्याया न शान्तिप्रभु को, तब-तब जीवन नीरस जैसा।
जब-जब जीवन नीरस जैसा, तब-तब आतम भूखा प्यासा॥
जैसे ही शान्ति का ध्यान लगाया, निज में निज का रस-सा आया।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में ये नैवेद्य चढ़ाया॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

जब-जब शान्ति की आरती न की, तब-तब जीवन में छाया अँधेरा।
जब-जब जीवन में छाया अँधेरा, तब-तब राही का बढ़ता है फेरा॥
जैसे ही शान्ति की ज्योति मिली तो, ज्ञान का सूर्य प्रकाशित पाया।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में आकर दीप जलाया॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

जब-जब शान्ति का पाठ किया ना, तब-तब कर्मों की बढ़ती कहानी।
जब-जब कर्मों की बढ़ती कहानी, तब-तब निज की विभूति विरानी॥
जैसे ही शान्ति का पाठ रचाया, कर्मों की कड़ियाँ चट-चट चटकीं।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में खेएँ धूप धूप-घट की॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

जब-जब न पूजा शान्तिप्रभु को, तब-तब दुनियाँ हमसे रूठी।
जब-जब दुनियाँ हमसे रूठी, तब-तब जीने की आशा छूटी॥

जैसे ही शान्तिप्रभु को पूजा, आतम में परमातम सा पाए।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में फल के गुच्छे चढ़ाए॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

जब-जब शान्ति विधान किया ना, तब-तब है हर क्रिया अधूरी।
जब-जब है हर क्रिया अधूरी, तब-तब न कम हो आपस की दूरी॥
जैसे ही शान्ति विधान रचाए, अंदर से मुक्ति का पाया इशारा।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अर्पित अर्घ्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : गिल्ली डंडा खेल...)

नमो-नमो जप रहो थो, माँ ऐरा तेरो लाडलो[2]
एक बार देखो हमने ऐरा माँ के पुण्य में[2]
चुपके-चुपके सो रहो थो, माँ ऐरा....नमो....
एक बार देखो हमने, हस्तिनापुर तीर्थ में[2]
रत्न-वर्षा पाए रहो थो, माँ ऐरा .... नमो....
एक बार देखो हमने सारे संसार में[2]
गर्भ कल्याणक छाए रहो थो, माँ ऐरा...नमो...

(दोहा)

कृष्ण सप्तमी भाद्र को, तजकर स्वर्ग विमान।
ऐरा माँ के गर्भ में, वसे शान्ति भगवान्॥

ॐ ह्रीं भाद्रकृष्णसप्तम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लय : बाजे कुण्डलपुर...)

बाजे हस्तिनापुर में बधाई, कि नगरी में शान्ति जन्मे...शान्तिनाथजी
शुभ मंगल बेला आई, त्रिलोक में आनन्द छाया... शान्तिनाथ जी
सौधर्म शचि सह आए, कि अभिषेक मेरु पे करें... शान्तिनाथ जी
नृप विश्वसेन हर्षाए, कि जन्म कल्याणक है... शान्तिनाथ जी

(दोहा)

चौदह कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्मे शान्ति विराट।
विश्वसेन के आँगने, ज्ञान-बताशा बाँट॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लय : अय मेरे प्यारे वतन...)

अय! हमारी आतमा, अय! परम परमात्मा, झूठी दुनियाँ त्याग, धार ले वैराग्य

जन्म मृत्यु कर्म सुख दुख, कर अकेले ही सहन।
पुत्र पत्नि मित्र बन्धु, स्वार्थ में सब हैं मगन॥
मोह मिथ्या नींद से अब, जाग रे चेतन जाग। धार ले वैराग्य।

(दोहा)

जन्म-तिथी में तप धरे, तजे अशान्ति शोर।
शान्तिनाथ मुनि को हुई, नमोऽस्तु चारों ओर॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लोलतरंग)

जब तक है अज्ञान अँधेरा, तब तक ज्ञान की ज्योति मिले ना।
जब तक ज्ञान की ज्योति मिले ना, तब तक मोह का अंध टले ना॥
जैसे ही मोह का अंध नशाए, केवलज्ञानी हों अरिहन्ता।
तत्त्व प्रकाशी निज रस स्वादी, जय-जय शान्तिनाथ जिनन्दा॥

(दोहा)

दशमी शुक्ला पौष में, पाया केवलराज।
नमन शान्ति अरिहन्त को, करती भक्त समाज॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जब तक है अर्हंत अवस्था, तब तक कर्म न पूर्ण नशेंगे।
जब तक कर्म न पूर्ण नशेंगे, तब तक शुद्ध न सिद्ध बनेंगे॥
कर्म नशें ज्यों मोक्ष मिले त्यों, सिद्ध बने गुण पाए अनन्ता।
काल अनन्ता ब्रह्म रमन्ता, जय-जय, जय-जय सिद्ध महन्ता॥

(दोहा)

चौदस कृष्णा ज्येष्ठ को, मोक्ष गए शान्तीश।
कुन्दप्रभ कूट शाश्वतगिरि, को वन्दन नत शीश॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

विघ्न हरण मंगलकरण, शान्तिनाथ भगवान्।
जिनकी पूजन से मिले, वीतराग विज्ञान॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! शान्ति प्रभो की, जय-जय अतिशयकारी की।
जय हो! जय हो! दया सिन्धु की, जय-जय मंगलकारी की॥
वीतराग - सर्वज्ञ - हितैषी, महिमा खूब तुम्हारी है।
सबके दिल पर छाए रहते, अजब-गजब बलिहारी है॥ 1॥

पिछले भव में रहे मेघरथ, राज-पाठ जिनने छोड़ा।
मुनि बन तीर्थंकरप्रकृति का, नाम कर्म बन्धन जोड़ा॥
फिर प्रायोपगमन धारण कर, कर संन्यासमरण उत्तम।
काया तज अहमिन्द्र बने फिर, हस्तिनागपुर लिया जनम॥ 2॥

विश्वसेन नृप ऐरा रानी, तुमको पाकर धन्य हुए।
गर्भ जन्म कल्याणक करके, सारे भक्त प्रसन्न हुए॥
शंख सिंह भेरी घण्टा से, जन्म सूचना पाकर के।
चार निकायों के देवों ने, पर्व मनाया आकर के॥ 3॥

गर्भ-भवन में शचि-इन्द्राणी, जाकर के माँ बालक को।
सुला दिया माया-निद्रा से, उठा लिया जिन-बालक को॥
सौंप दिया सौधर्म इन्द्र को, इन्द्र चले ऐरावत से।
सुमेरु पर जन्माभिषेक कर, नाम शान्तिनाथ रक्खे॥ 4॥

चक्र शंख सूरज चंदादिक, चिह्न सुनहरे थे तन में।
होकर कामदेव बारहवें, किन्तु रहे निज चेतन में॥
कुमारकाल बीत जाने पर, विश्वसेन निज राज्य दिए।
चौदह रत्न और नौ निधियाँ, प्रकट हुए जो भोग लिए॥ 5॥

शान्ति चक्रवर्ती ने इक दिन, दर्पण में दो मुख देखे।
आत्मज्ञान वैराग्य हुआ तो, क्षणभंगुर वैभव फैंके॥

ज्यों घर तजने का सोचे तो, लौकान्तिक अनुमोदन पा।
राज्य दिया नारायण सुत को, फिर दीक्षा अभिषेक हुआ॥ 6॥
तब सर्वार्थसिद्धि पालकी, से गृह तजने यतन किए।
सहस्त्र आम्रवन में दीक्षा ले, पंचमुष्ठि केशलौंच किए॥
शान्तिनाथ जब बने दिगम्बर, धरती अम्बर गूँज पड़े।
ज्ञान मनःपर्यय प्रकटा तो, भक्ति पुण्य सब लूट चले॥ 7॥
मन्दिरपुर में सुमित्र राजा, दीक्षा का आहार दिए।
पंचाश्चर्य पुण्य पाया तो, सब ने जय-जयकार किए॥
सोलह वय छद्मस्थ बिता के, बने केवली शान्तीश्वर।
समवसरण फिर हुआ सुशोभित, थे छत्तीस पूज्य गणधर॥ 8॥
मासिक योगनिरोध धारकर, श्रीसम्मेदशिखर पर जा।
शुक्लध्यान से कर्म नशाकर, सिद्ध मोक्ष में बने अहा॥
जो श्रीषेण हुए राजा फिर, भोगभूमि में आर्य हुए।
देव हुए फिर विद्याधर जो, देव हुए बलभद्र हुए॥ 9॥
देव हुए वज्रायुध चक्री, फिर अहमिन्द्र मेघरथ बन।
मुनि सर्वार्थसिद्धि पहुँचे फिर, तीर्थंकर शान्ति भगवन्॥
ऐसे शान्तिनाथ भगवन् के, बारह-बारह भव सुन्दर।
शान्तिनाथ सा अन्य कौन जो, धर्म धुरंधर तीर्थंकर॥ 10॥
कामदेव ने जन्म धारकर, जीती सब सुन्दरताएँ।
शान्तिनाथ ने चक्री बनकर, जय की सभी सम्पदाएँ॥
तीर्थंकर बन शान्तिनाथ ने, पाया मोक्ष कर्म कर क्षय।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, शान्तिप्रभु की बोलो जय॥11॥
कालचक्र वश लुप्त धर्म को, वृषभ आदि प्रभु दिखलाए।
फिर भी प्रसिद्ध अवधि अंत तक, बोलो कौन चला पाए?
किन्तु बाद में शान्तिप्रभु से, मोक्षमार्ग जो प्रकट हुआ।
अपनी निश्चित अवधिकाल तक, बिन बाधा के प्राप्त हुआ॥ 12॥

ऐसे शान्तिनाथ भगवन् का, ध्यान निरन्तर धारो तो।
होगा भला शान्ति भी होगी, बुध ग्रह में मत बाँधो तो॥
आज आद्य गुरु शान्तिनाथ का, चमत्कार कुछ अलग दिखे।
खण्ड-खण्ड सौभाग्य पिण्ड भी, 'सुव्रत' पुण्य अखण्ड दिखे॥13॥

(सोरठा)

हिरण चिह्न पहचान, शान्तिनाथ प्रभु नाम है।
त्रयपद मय भगवान्, बारम्बार प्रणाम है॥
पुण्य खरीदा आज, भक्ति मूल्य का दाम दें।
शान्तिनाथ जिनराज, स्वर्ग मोक्ष सुख धाम दें॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

शान्तिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, शान्तिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

अर्घ्यावली

(अनन्त चतुष्टय) (हाकलिका)

कर्म हरे ज्ञानावरणी, पूज्य बनें अनन्तज्ञानी।
धर्म दान शुभ वस्तु दो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणकर्मसम्बन्धी-उपद्रवनिवारकाय-अनन्तज्ञानप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.॥1॥

हरे दर्शनावरणी जो, अनन्त दर्शन स्वामी वो।
निज दर्शन की वस्तु दो शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणकर्मसम्बन्धी-उपद्रवनिवारकाय-अनन्तदर्शनप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥2॥

मोहनीय को नष्ट किए, अनन्त सम्यक् प्राप्त किए।
श्रद्धा सुख की वस्तु दो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म सम्बन्धी उपद्रव निवारकाय अनन्तसुख प्राप्ताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 3 ॥

अंतराय नाशे पाँचों, अनन्तवीर्य का यश वाँचों।
आत्म शक्ति की वस्तु दो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं अंतरायकर्मसम्बन्धी-उपद्रवनिवारकाय-अनन्तवीर्यप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 4 ॥

(अतिशय)

हुए जन्म के दस अतिशय, क्षणिक शान्ति मिलती जय-जय।
अतिशयकारी वस्तु दो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं गर्भजन्मसम्बन्धी-कर्मोपद्रवनिवारकाय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 5 ॥

दसों ज्ञान के अतिशय हों, शान्ति ज्ञान के आलय हों।
ज्ञान-ध्यान की वस्तु दो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं ज्ञानसम्बन्धी-कर्मोपद्रवनिवारकाय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 6 ॥

हुए देवकृत अतिशय जो, शान्तिविधायक चौदह वो।
विघ्न विनाशक वस्तु दो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं चतुर्विधउपसर्गसम्बन्धी-कर्मोपद्रवनिवारकाय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 7 ॥

(त्रयपद)

सोलम तीर्थंकर चक्री, कामदेव त्रय पदधारी।
रत्नत्रय की वस्तु दो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकसम्बन्धी-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 8 ॥

(अष्टप्रातिहार्य)

अशोक तरुवर हरे भरे, शान्तिप्रभु सम शोक हरे।
हं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं ह्म्ल्व्यूं बीजसहित अशोकतरु-सत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 9 ॥

दिव्य सुमन सुर बरसाते, शान्तिप्रभु सम सुख लाते।
भं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं भ्म्ल्व्यूं बीजसहित पुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 10 ॥

दिव्य ध्वनि ओंकारमयी, सुख संपद दे नयी-नयी।
मं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं मृम्ल्व्यूं बीजसहित दिव्यध्वनि-सत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 11 ॥

चँवर ढुराएँ चौसठ देव, उर्ध्वगमन होता स्वयमेव।
रं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं र्म्ल्व्यूं बीजसहित चामर-सत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 12 ॥

शान्तिप्रभु सिंहासन पर, ऋद्धि सिद्धि दें मोहित कर।
घं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं घ्म्ल्व्यूं बीजसहित सिंहासन-सत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 13 ॥

सात भवों को भामण्डल, दर्शाकर करता मंगल।
झं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं झ्म्ल्व्यूं बीजसहित भामण्डल-सत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 14 ॥

देव दुंदुंभि वाद्य बजें, दसों-दिशा तक गूँज उठें।
सं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं स्म्ल्व्यूं बीजसहित देवदुंदुभि-सत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 15 ॥

तीन लोक के अधिपति जो, तीन छत्र से शोभित सो।
खं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं ख्म्ल्व्यूं बीजसहित छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 16 ॥

(जोगीरासा) (अष्टकर्म वर्णन)

ज्ञानावरणी कर्म प्रकृतियाँ, पाँच तरह की होतीं।
जो ढँकले सर्वज्ञ ज्ञान गुण, आतम जिससे रोतीं॥
परम दयालु शान्तिप्रभु सम, ज्ञानावरण नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ाके भक्त आपको, सादर शीश झुकाएँ॥

ॐ ह्रीं अज्ञानबुद्धि-कर्मोपद्रवविनाशनसमर्थ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 17 ॥

दर्शनावरणी कर्म प्रकृतियाँ, नव प्रकार की होतीं।
ढँके निराकुल दर्शन गुण जो, आतम जिससे रोतीं॥
परम दयालु शान्तिप्रभु सम, दर्शनावरण नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ाके भक्त आपको, सादर शीश झुकाएँ॥

ॐ ह्रीं दर्शनदृष्टि-कर्मोपद्रवविनाशनसमर्थ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 18 ॥

वेदनीय की वेदन प्रकृतियाँ, दो प्रकार की होतीं।
अव्याबाध हरे सुख-दुख दे, आतम जिससे रोतीं॥
परम दयालु शान्तिप्रभु सम, वेदन-कर्म नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ाके भक्त आपको, सादर शीश झुकाएँ॥

ॐ ह्रीं सुख-दुःख-कर्मोपद्रवविनाशनसमर्थ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 19 ॥

मोहनीय की मादक प्रकृतियाँ, आठ-बीस विध होतीं।
जो ढँक ले रत्नत्रय प्यारा, आतम जिससे रोतीं॥
परम दयालु शान्तिप्रभु सम, मोही कर्म नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ाके भक्त आपको, सादर शीश झुकाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रद्धाचारित्रविरोधी-कर्मोपद्रवविनाशनसमर्थ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 20 ॥

आयु कर्म जंजीर प्रकृतियाँ, चार तरह की होतीं।
बाँधे ढाँके अवगाहन गुण, आतम जिससे रोतीं॥
परम दयालु शान्तिप्रभु सम, आयु कर्म नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ाके भक्त आपको, सादर शीश झुकाएँ॥

ॐ ह्रीं बन्धक-बन्धन-कर्मोपद्रवविनाशनसमर्थ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 21 ॥

नाम कर्म बहु रंग प्रकृतियाँ, जो तिरानवे होतीं।
हरे सूक्ष्म गुण बाधक बनतीं, आतम जिससे रोतीं॥
परम दयालु शान्तिप्रभु सम, नामी-कर्म नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ाके भक्त आपको, सादर शीश झुकाएँ॥

ॐ ह्रीं बाधकसाधनतत्त्व-कर्मोपद्रवविनाशनसमर्थ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 22 ॥

गोत्रकर्म की गजब प्रकृतियाँ, दो प्रकार की होतीं।
हरे अगुरुलघु ऊँच-नीच दे, आतम जिससे रोतीं॥
परम दयालु शान्तिप्रभु सम, गोत्री कर्म नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ाके भक्त आपको, सादर शीश झुकाएँ॥

ॐ ह्रीं ऊँचनीचहेतु-कर्मोपद्रवविनाशनसमर्थ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 23 ॥

अंतराय की चतुर प्रकृतियाँ, पाँच तरह की होतीं।
हरें वीर्यगुण कार्य बिगाड़ें, आतम जिससे रोतीं॥
परम दयालु शान्तिप्रभु सम, सब अंतराय नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ाके भक्त आपको, सादर शीश झुकाएँ॥

ॐ ह्रीं विरोधीअराजकतत्त्व-कर्मोपद्रवविनाशनसमर्थ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 24 ॥

पूर्णार्घ्य (जोगीरासा)

एक सौ अड़तालीस कर्म प्रकृतियाँ, आठ कर्म की नाशे।
नन्तचतुष्टय प्रातिहार्यमय, समवसरण में वासे॥
अतिशयकारी त्रयपदधारी, सब अपराध नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ाके करें नमोऽस्तु, सादर शीश झुकाएँ॥

(दोहा)

ओम् ह्रीं बीजाक्षर सहित, ह भ म र घ झ स ख आठ।
शान्तिप्रभु को हम भजें, करके शान्तिपाठ॥

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशत् मूलगुणसहित अष्टबीजमण्डित सर्वविघ्नशान्तिकराय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं जगच्छांतिकराय श्रीशान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

अद्वितीय जिनराज हैं, शान्तिनाथ भगवान्।
जिनके सुमरण से मिले, परमशान्ति निर्वाण॥
चक्रवर्ति पंचम रहे, बारहवें कामदेव।
तीर्थंकर सोलम जिन्हें, शीश झुके स्वयमेव॥

(सायक)

हम माथा जिनको टेक चले, वह प्यारे प्रभु शान्तीश मिले।
बस आशा अपनी एक रही, हमको भी प्रभु आशीष मिले॥
हर तीर्थंकर से भिन्न रहे, निज को पा निज में लीन रहे।
जय शान्तिप्रभु हे शान्तिप्रभु! अपने तो निज-आदर्श रहे॥ 1॥
भवसागर तिरने यान रहे, निज मुक्ति वर श्रद्धान रहे।
चित्-ध्यानी बनने ध्यान रहे, निज-ज्ञानी बनने ज्ञान रहे॥
अघ हिंसा हरने दूत रहे, फिर भी जो निज चिद्रूप रहे।
जय शान्तिप्रभु हे शान्तिप्रभु! हम धर्मीजन की शान रहे॥ 2॥
जय पापों पर भी आप करें क्षय वैभाविक भी आप करें।
हर विघ्नों दुख को आप हरें, चरणों में हम भी माथ धरें॥
गुण सोला धर, तीर्थंकर का, पद पाया जिन सम्राट अहो।
जय शान्तिप्रभु हे! शान्तिप्रभु, अपनी भी कुछ तो बात रखो॥ 3॥
प्रकटायी निज की शक्ति सभी, प्रकटायी निज की मुक्ति जभी।
प्रकटाएँ हम भी शक्ति सभी, रच पाई जिन की भक्ति तभी॥
अब स्वामी कर दो आप कृपा, हममें भी निज की शक्ति भरो।
जय शान्तिप्रभु हे! शान्तिप्रभु, हमको भी निजवत् शुद्ध करो॥ 4॥

यह विश्वास हमें भी कुछ दो, नित हो साथ हमारे तुम भी।
यदि विश्वास यही हो प्रभु तो, सह लें कष्ट हँसी से हम भी॥
जय को प्राप्त किए हो तुम ज्यों, जय को प्राप्त करें यों हम भी।
झट ही 'सुव्रत' को शान्ति मिले, निज 'विद्या' पद को पाएँ हम भी॥ 5॥

(सोरठा)

यह अनन्त संसार, यहाँ कहाँ पाओ शरण?
अतः शान्तिप्रभु द्वार, खोजें पूजें हम चरण॥
यही लगा के आश, आत्मशान्ति हो विश्व में।
बनके प्रभु के दास, पाएँ मोक्ष भविष्य में॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

शान्तिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, शान्तिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

॥ इति श्री शान्तिनाथविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

सिद्ध क्षेत्र अतिशय जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
पूर्ण 'पवाजी' में हुआ, शान्तिनाथ विधान॥
पन्द्रह सोलह जनवरी, आए पार्श्व नवीन।
चौबीसी त्रैयकाल में, हुए उच्च आसीन॥
दो हजार चौदह रहा, बुध गुरु दिन तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : विद्यासागर की गुण.....)

शांतीश्वर की, परमेश्वर की, शुभ मंगल दीप सजाय हो,
हम आज उतारें आरतिया॥
विश्वसेन ऐरादेवी के गर्भ विषें प्रभु आये।
हस्तिनागपुर जन्म लिया था, सब जन मंगल गाये,
प्रभुजी, सब जन मंगल गाये।
तीर्थंकर की, क्षेमंकर की, शुभ मंगल दीप प्रजाल हो,
हम आज उतारें आरतिया॥ 1॥
तीन-तीन पदवी के धारी, लोकालोक निहारी।
धर्मधार को पुनः बहाकर, सुखी किये संसारी,
प्रभुजी, सुखी किये संसारी।
जगस्वामी की, शिवधामी की, हो बार-बार गुण गायके,
हम आज उतारें आरतिया॥ 2॥
दर्शन करके अतिशय सुनके, जीवन सफल बनायें।
भक्तिभाव से आरती करके, पुण्य शांति हम पायें,
प्रभुजी, पुण्य शांति हम पायें।
शुभकारी की, अघहारी की, धर 'सुव्रत' शीश झुकाय के,
हम आज उतारें आरतिया॥ 3॥
शांतिश्वर की .....॥